

१४ नो

इति नमो श्री कृष्णाय नमः

इति नमो श्री कृष्णाय नमः

आशा सरस्वती

262

ASNA ARCHIVES

वस्य मा नायां यमानकः रुद्रः सित नक्र मरुतः रुद्र वज्र मज्ज नवज्ज महि कमल धारी ॥ दक्षिणे स्यां पु
 रुं नक्रः सितः रुद्र नक्र मरुतः वज्रं कित सित दक्षिण महि पत्र धारी ॥ पश्चिमायां पद्मा नक्रा नक्रः निम्बः
 सिताक्षः नक्र पद्मा निमलि चक्र धारी ॥ उत्तरे स्यां विष्णुं नक्रः रुद्र सित नक्र मरुतः काल वज्रा निम
 लि पत्र धारी ॥ आग्नेयां दक्षिणायां नक्रः सित नक्राक्षः रुद्र वज्र महि मरुत धारी ॥ नैऋत्यां नील द
 धुः रुद्रः सित नक्राक्षः नील दधु वज्र मरुत धारी ॥ वायव्यां महा वलः रुद्र सित नक्र मरुतः किं न यो नि
 महि कमल धारी ॥ उत्तरे स्यां मरुता नील कक्र नक्राक्षः रुद्र वज्र महि पत्र धारी ॥

मलियप्रधानीगउर्ध्वमूषीषचक्रवर्णीपीनानीलचक्रास्य४पीनचक्रवर्जमलियप्रधानीगअध४संहनाज
नील४पीनचक्रास्यवज्रवर्जमलिकमलहनागगुणीषट्कचसंहानत्वमकूटिनाविविग्रवताएव
आतलिना००षट्मिगदंष्ट्रविद्यनस्यगुव४नदेनेविक्रमनूपा४सुगुहंग४पिऊर्ध्वकमाय४मगुवाया
कुदंष्ट्रकनालवकुलरज्जिकानदना॥६६हसिन४कनायनागरुषमा४वामना४पीनामुलिलाध्यादमाय
नसहसनेनिम्यला४यहाली४नानागुणीषट्कचसंहानत्वमकूटिनाविविग्रवताएव
होमापुल्यानतपुनिसममयषमूर्ध्वनपविमिनासंकमर्हिनिमालिभ्यनिनवधिधोदुगयषविधोघमरिचि

लममकृनिमलपन ४ वक्रुजा ४ पुधानुजाखांखा एपुहा मातिङ्गिगमि मखा ४ मखकु मलमनीनव लस
ववाम भयथा कवर्धुपनिमखन कवर्धुलपिनर्त वक्रुवातिगुमेजनीने लापमनीर्त नर्त रूवदन कक्षल
कसाय नस्यना एन नध ४ कायविविज्जालुगि कालधर्मादया नध ४ का लोङ्ग नविठवदल कमलोपालिविठव
कलिगसाहिना नध ४ सुदिगम नायथायार्ग वेवाचनादि समवर्धुवदिवागस्याय वेवर्धुवतपविनिषा ३
लाखान्मनी नुमलुलविर्वां मुवाक सर्वदिक् कुं कूटां गावर्धुस ईर्जवी ल्हाङ्गिगस्यम ल्हाङ्गिगानुवज गल्हा मई
वर्जनेप ४ कूमा न ४ कूसिगस्यगनवदन ४ पुधानुजाखांखा एपुहा लिंगिगा अङ्गिग वेवदिवसवापध

नानलमकूटविचिगुनलाया एन लो १ नाह ४ नस्यपर्वस्यान्दिभिर्वेवाचन ४ मीन कषुन कसय नवम
व ४ मिनाखन चक्राणिमलिकमलधन ४ दक्किलस्यांनेले ४ पीनान वार्धमन कटनलागिच कुप नधना
४ पाधिमायाममिगार नक ४ नकप न्नामिभिच कुधन ४ उरुनस्यामभायसिद्धिरुतिग ४ खभच क
मलिकमलधन ४ यथा इमि कषुमिगस्यगनववक्रु ४ सर्वगथागन वलमकूटिना विचिगुनलाएव
ल ४ अलनयांलाचना वेवाचनसमा ४ नेअखांमामकि अक्षाखसमान को ल्हाङ्गिगमलिय नधना ॥ सर्वस
धनधनथापा भगवायथाया लुना अमिगार समा ॥ नेअन्यां ना नालसमो ॥ पीनाय ल्हाङ्गिगमलिय न

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

धना। अनागते पदादृष्टिना। अयं का। अत्र यवजं वेनावनतं हृत्वा। जलदये। अतिमध्यं धना। अने
मले। अथ वजां। अथ रामा। नीलवी। ताकृया। अमध्यं धना। वायुवे। गन्धवजा। जले। अस्मा। यी। तर्ही। स्वा
तिवका। धना। या। गदा। ग्राह्य। यार्थस्य। अथ वजा। यमाय। सिद्धि। समावि। श्ववर्गु। वस्तु। निमति। अथ धना।
या। गदा। नद। कित। पा। अर्थधर्म। अथ वजा। वजसूत। समाध्वलधर्म। अथ धना। अनु। गाम। श्ववजा। दिदव
नामि। वदना। अथ वजा। अथ विद्वध्वनं। स्वास्यामयनद्वयं। वामा। र्पा। दधना। अथ वजा। अथ वजा। नी। ववर्गु। भाव
गायत्री। दिद्वध्वनं। यमा। नक। पु। ह। नक। प। नक। क। अमृग। कलु। लेय। अथ वजा। अथ वजा। वेनावनतं हृत्वा। अथ वजा।

[illegible]

३ मन्त्र

[illegible]

३६
 स्मिन्नेकस्यस्य नमिष्टं गंगाज्जमिता हस्त्यायि एवमि, लुक्काधर्माष्टपुत्रस्यमिष्टं वागीशस्यायुक्तं नृपकंष्टं
 नृकं वक्रमानं वचमलुतं यस्यामलुतं यदवतायाम्स्वातायस्मन्मन्त्रं नस्मीनमेव पुष्पाननगयाम
 लुतं लोहमिष्टं स्वीनदालिगिता हस्त्यायि एवमिष्टं स्वीनदालिगिता हस्त्यायि एवमिष्टं स्वीनदालिगिता हस्त्यायि
 जपेष्टं नवज्ञाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं
 त्सां नवज्ञाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं
 धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं धर्मादयाचक्रं

५

कननलाकधगोभ्यकुवाउसचकं वजावलीलिखनं अनियमनेवानेवंवक्राचकुमगानलिखंनराविद्य
 निवाउनलन्यथाक्रियनेअपिचक्षुननेवरेगवतीनिखितविधौघंसमस्तमनलयिर्दुपुहवतीनिगद
 धिनाउदृष्टलेनवादनयात्यादनायनक्राचकुलिखनंनवसिर्नलखिगवगनप्रवक्तुर्विदुपाकात्रमपिव
 कवाउभ्रवकनलिखितवी।अथकूटागमनोत्पल्लोमइत्ययमनेवंनहिरुगवमावक्रपाकानस्यद्वितीयवा
 जायकिःकविइकागकिंवादिनृत्यस्यासकगइत्यन्तमवहिवक्रवधपाकाजादिकंसमस्तसमावायभ्रव
 नासंलावमायामयमवर्तिष्ठनवाविद्यमानत्वपिचक्राचकुस्यमलुत्तस्यलिखनापपरिचरकैवाकम्बिगु
 ति

५

कविइक्राचकुमपिलिखितुंसमन्तगवाः॥१॥निमइवक्रमलुत्त॥ १ ॥पिगुक्रमाक्रमलुत्तुक्रु
 टागमनपर्यन्तंयुववगाकाधनामुविमषीवक्रनकूटागमनस्यमध्यःक्रावःकक्षमोडः॥गीगनकसर्थः
 नचमरव॥सद्यकनेःकूनवकुपप्रानि॥वामेद्यभुचिनामनिरवजान्चिआन॥स्वाहमवजालिं
 क्रित॥नस्यएवादिदिदु॥वेजावनादय॥अगुयादिविदिदुलावनादय॥नगुवेजावनामुद्व॥भाक॥
 क्रुक्रुवक्रमरवभ्यकुवक्रपुत्रीकद्यलामलिरवअध्व॥उकेषवक्रमानेषवउजषपुथर्मसद्यवर्द्धना
 इध्यावदामभ्रअध्रुदद्विद्विपुनियादनक्रम॥मूलसद्यवामक्रमनमूखप्रयवर्द्धपुनिपादनंनत

मा माया गयूती दिवा नं चालनयादि को ल व र्ध म ध र्ध य धा क र्म द म को धा ४ ग नु य मा न क ४ क ४ क ४ क
 सु सि त न क व कौ व ज म र्ज न च क व जालि रु दि वा म पा म ग र्ज नी घ ल्हा पु र्ण न वि श्रा म ४ पु ह न क ४ क ४ क ४ क
 न ४ सि त क र्म न क व द नो व ज व जालि ग सि त द लु ख र्ज रु त्सा पा म ग र्ज नी घ ल्हा पु र्ण न र न प द्मा न कौ न
 कौ न क र्म सि त र्हा न क प म र व म र व ल घ ल्हा पु र्ण पा म ध न ४ वि द्वा न कौ नी लो नी ले सि त न कौ र्हा वि
 र्ध व ज च क र्म र व ल स पा म ग र्ज नी घ ल्हा प र्ण ध न ४ अ व लो नी लो नी लो नी ल सि त न क र्म र व ४ र व र्ज व ज च क
 र्ज नी य र्ण पा म पालि ४ र क्ति वा ज नी लो नी ल सि त न क र्म र व ४ यालि र्हा व र्ज र्हा कौ न म ड म प र व र्ज र व र्ज या

गो क र्मा न वि श्रा म नी ल द लु क र्म ४ क र्म सि त न क व कौ व र्जा कौ नी ल द लु ख र्ज च क र्म रु त्सा पा म ग र्ज नी रा प
 म य र्ण ध न ४ म र्हा व ल ४ क र्म ४ क र्म ४ क र्म न क व द नो व र्जा क द लु ख र्ज च क र्म रु त्सा पा म ग र्ज नी य द्मा य र्ण ध
 न ४ उ र्ध व च क र्म व र्हि क र्म ४ क र्म सि त न कौ र्हा य धा न रु जालि म र्वा र्म र्धि धा न य न ४ र्ध व र्ज य द्मा न
 र्ज नी र व ज्ञा न पु र्ण न स र्हा न पालि व ल्हा मि कान र व र्धो न य र्ण रु र्ध न र व र्धो न य र्ण क नि र्ध र्धो नी ल र्धो न य र्ण
 म स म न र व र्धो न र व र्धो न क य र्ण मि न्धो न र व र्धो न कौ र्हा व ल र्धो न म म न्ना व र्हा साना म उ र्ध व म र्हा क वि न ४ क वि
 र्ध न य धा ग र्म र्हा न ४ क र्म सि त न कौ न ना व र्ज च क र्म रु त्सा पा म ग र्ज नी य द्मा र व र्ज ध न धा न ग र्ज र्हा र्हा द यो

विश्वयज्ञाय नियथा कुमं पञ्च कवज वक्रनवांगम वक्र नल न कय भ विष्ववज वक्र वज य भ वि
ष्ववज वक्र वज विष्ववज नाग के भन य च वक्र वज नल य भ वज विष्ववज वज म भ ना वज न का ड वि
ष्ववज ग व भ म वि व ज नी ल द लु क रु द लु ४ वज वज रु सूर्य चन्द्र सि ना भि म र्वा ४ वजु ४ व भ म वि
५ वाय न न न ग पि स द व गा व लु पा ० न ल घ टि ना न तु वे नी व ना द वा भि स त्वा च्च न रु ४ अ न्य सूर्य
रु ४ अ ऊ आ द यो व ज प र्य कि ४ का भ म पु ला ती ट च न म ४ यु नि व कुं न क व रु ल गि न ग क ल ना हि
ली मान ज्ञा च कु क वि क न न या दि वि ल ष न भ सि न ४ अ य व कु म ल व स व ह य व द व गा ४ रु रु य य नाः

निष्पृष्ट ४ न ज्ञा व कु रु मु य मा न क का द य ४ स स्वा रु पु ह्ना रु च य थ कु मं व ज व ना ल्य प ना जि ना रु क रो क ज
टी विष्व व जी विष्व न ती विष्व य ज्ञा विष्व क मा गि ग न व जि ती ध न नी ध ना ४ अ ऊ आ द य ह दि ह्ना न स त्वा द्वि तु
ज ४ ग स पु ह्ना व क रु स ह दि क रु रु व ना च न स ह दि उ न ल भ स स्वा अ मि ना रु स आ ४ अ मा घ स
रा रा ता व ना दि द वी नां तां मां पां नां ज ४ ह वं ह ४ स र्ध व जा या ४ र्व र्मे गु या य ह्ना नां रु र्मे थौ उ उ उ ह उ स
रा द ग क्रो ध नां ह द य म नु मु द व ना नां व जा व त्वा म का ४ क ल भ स र्वा स म न रु द यार्क स त्व ४ य वी
क ४ कि नु व ज व क प भ घ भ म लि ख भ ध न ४ स्वा रु व ज धा ली भ्य नी स मा लि कि न ४ न थ ग ना नां मा म की व ज याः

३७

विमर्शधाषाषसूत्राज्ञानामकाखधलावनानूयवजाभेययक्तिगर्हयमानककावलानीवेवावन४॥
 मद्रवजाखगएपुष्टककठकिनाजानीनलेमहायालुनागधवजाताध्वसयमानकनीतदलुनाभिगार
 हातानानसवजास्यमविजाविष्कहीविद्याककमहावतानाममाघसिद्धिनिमिष ॥ श्रीसंयुक्तमन्त्राका
 वजसत्त्वमलुलवजयजेनायकनवकाचकनाहिरगर्हमनीलानलजलहमलुलसूभयनिधमादिषादवः १०
 कूटागमनादवकूटागमनवकाचककुयमाविशसथामिहिरुजवजाकूमाचकुवजालिदधाननशवामेमिहिरु
 हनसगर्हनीयाभयलपमृषापुष्टककावजयार्गवजखजप्रहदिगर्हनीयलपमृषाकरायमानककानिम

७

उपमंखजप्रचलपमृषाभयविद्यानिवजयलंविष्कवजवकुंवगर्हनीयार्गमखेतपमृषाकराज
 चलखजवकुंवजंगर्हनीयमृषाभयवटकिनाज४सर्वगतकदयनवजलकाचमजामकूमाखजच
 वजयार्गवानीलदलुवजाकनीलदलुखजवजालिहदिगर्हनीयार्गपमृषाकरामहावतमिषत
 खजवजालिहदिगर्हनीयार्गपमृषाकराउषीषचकुवलीमद्विभयननकनदयोउषीषमजविक
 पमृषागर्हनीयखजोवसूत्रावजचकनलानिहदिगर्हनीयार्गपमृषाखजवगुर्गदभामिबसियकरकापा
 लमलिगाश्चकुादियकरमदिल्लगलावलमिनमूमातिनायथाकर्मवेवावनचलभमिहामाघ
 ना

७७

११

ममधनन लेममिता लामाया आया आया मडिगा ॐ मि ॥ कूटा गन गल वज्र धन ४ ममि न ॐ यड कान वि
 वसित वरु कुरु जय हरे निवि वम निवि व कूलि गत दत्ता वाम वलि ताक्ष स धी मय च व दम क र ल ता ठाय नि य क
 क नार व की कलु ल क ली न च क म र ता र म्मा र धि त मि म र व नी ल न क म य म न व क म य म म र व नि न य ४ व
 पुजा व द्यु ल वि ना जि न तु ज य म्मा लिं ग स्वा र य ह म नो व रु द्ध न न नि न ४ स य क न र्णा क य म्मा क म व नो व म म र्णा क
 य ल य स र न म्म य प ल म लु ली वि म्म य म्म क र्ण ल व उ र्ध्व य र्थ कृ प न व न म्मा न स र्णा लु वी त कृ दि वि म्म क र्ण नो ह न स
 लो न क मि न ४ स ल य र्थ क र्ण च नू य र व द्ध म् कू टा च ल र च न ४ स व ज व ज व लु धि क न का डि न स्वा र य ह म्म रु द्ध

३

दि तु वि लो क र्ण कान नू य ४ म मा धि स ल ४ ज स मि स लो ल क व ज ध न र्णा य र्व वे श च न ४ म्म य ४ सो म य व द्धु र्ज
 ४ स र्वा र्थि च क य ल ४ वामा र्णा क य ल लो द धान ४ द जि ल व लो म ४ यो ग र्ध नु र्ज ४ स य र्णा न ली क लो वामा र्णा क
 य ल य ल ४ य मि म र्मि म र्णा न क व र्ण च नु र्ज ४ स य र्णा वान य म्मा वामा र्णा धन य ल ४ उ ल न र्मा य सि धि
 रु नि त ४ स य र्णा व व र्णा क लो ४ वामा र्णा र्ध ल क य लो ४ नो म न नो व ल ४ क र्ण नु ज स र्वा र्थ क व ज र व न वा म
 न ४ वामे ४ क य ल य ल ४ य म ध नू धि ४ ज र्ण य म म कि नी ल द म्म नु र्ज ४ द जि लो वामे न स र्वा व ज व क व ल
 य मालि वामे ध न व क म य ल य म क य ल र व द्ध म्मा नि ४ नो म न य लु नो न क र्ण नु ज ४ द जि लो वान य म्म र व ज

३ क ४

निवामेष्टन कपालपामघल्लभावायुयुगावाहनिगाहसुजासुथेनकात्यलवजाकमवात्मनिवामेष्ट
 कपालकपालधनं विविदिनीयपूठयुधस्थितिमिवजुगोदीभुजावागमकमधन४७ कपर्लकपाल
 क॥ दक्षिणस्थविजविमं पीतावजुधलचयामनकपर्लकनाटकर॥ पश्चिमायां नागवजावका॥ खजवजं च
 विचिपर्लकपालं घल्लकर॥ उरुनस्थविजसोमाहनिगा॥ पिदिनीत्रियनाकां च वजकपालं च॥ उभयनीं वजयज
 सिमपीतागदकुमत्यलवकपालं उमच॥ आलनयां विजजाकिनीपीतवका॥ पद्मदयां लक्ष्मद४७ पर्लकपालः
 लं पठु॥ नेमस्यां दवजावकनीला॥ मर्किं मं सर्वचर्कनकपर्लकपालं च॥ वायुयां पृथिवजाहनिगसि

न कमलकलिकाकरजमृत्तयदीयपर्लनचवर्मकुदिनकपालघल्लकर॥ नगाधोवकुर्जुजा४८ पथमचिह्नद्वयः
 ल॥ लीजयचदयं वामायां विजुल४९ हनीयपूठपायां दिमिरुस्यनका॥ सवजवजघल्लकासारिनयकच
 दया॥ अवाद्यां तासातीला॥ वजवजघल्लधाविमगर्वलासारिनयकुजयग्मा॥ पृथीयां गीगापीत॥ र्गमचल
 कायमीषत्रायनिकेनेमस्यां मकुन्नामिगा॥ वायुयां नजाधूमवर्ल॥ नगाध्वगज४९ स्वस्ववाधवादनयचकल
 दया॥ गगावाकपटिकायामालनयां पृथ्यां कु॥ पृथ्यामातावकुधालिवामनचकुजा॥ नेमस्यां ध्रुवाधूमव
 र्लध्रुपकटकुचलगाहिवाभनचरुसा॥ वायुयां दीयाकनकवर्ल॥ धृतदीपयष्टिपद्मवामसव्यकुजातनम

न्यागिभानकागभनखखजधविवाभनकनाययायामादमीत्वनादर्पणरुनकुजयग्मात्प्रवाचीप्रसा
नकाधननस्याउरुसुधयापुगीशीसर्गनीमाविषवसुहृन्कुजधयाउदिशीधर्माधवताधववध
ॐ मादयाधविनदयशाजनाधवेभावनादयोदवमानकवकुम्भिनेना४कसुजनामकूटिना४पयकनाटक
हयुलंकनादियवाससाइहययकनगालुविन्या४गयवदाववजांकुभीगगनधमाकसुसिगसधननवकापुजुज १२
सथीनकुभखजवकालिविजुगीवामे४यामनकुनीधन्ध४दक्रिलवजयाभीपीगाहसुवकसधननमस्वी
वदुजुजासथी४यामवजध्वजान्वाभेधकधन्धसगकुनीयामान्पमिधमवजसुहृन्काकसुसिगसः

धननमस्वी।षडुजासथीत्रिगउवजाभीनरवामेधकधन्धकुभान्उरुवजधन्धरुनिगाकसुसि
नसधननवदनाषडुजासथीधन्धवजाभीनरवामेधकाकुभयाभान्नुनाधन्धमु४यनिवकुंठिनना
कलद्रुधकपिलकुनला४ययकयासचकुदिहसन्धवाधुवर्माधवाधेयसातीदननकाविध्मद्रकया
तसूर्यतलसंरुवामिगारामाघसिद्धयाशिपिविध्मद्रकनाटववोअन्नामुसर्वदवगाविध्मसवाजकनाट
चन्द्रसु४सूर्यपुलाकुसर्वानवराअग्गवजसत्वजवसपुह्रा१२न्यामुसर्वदवगानि४यह्रा०००कयक४॥स
स्वाह्यपुह्रा०००निदिगीय४॥कुरेभामुवजसत्वादिगधगनानांमामकीभकवजागीनासर्गवजाधर्मधामुव

व१

जलममझा ए० ४१ लोचनावजमोडी पथी जायसा लासा वंमवजां नीके नीवे लाचन ४१ वजजाकिनी वजविवाः
प्रयालासावीसावजयाही नीचतम रव १०००

द्वाली कना ऊलि ४५ गोपनि वाम भुवन कच गुडुका क एकपाल रुद्र सयन वा कना ऊलि ४६ रंगी
 कफ ४७ कफ ४८ कसुग कमलु लधन ४९ कना ऊलि ४९ मषक गलपनि ४९ सिन ४९ कनिवकु ४९ सपयि क्षप
 वीगी वगुडु ४९ सर्वाली गि ४९ लल दू को वामा लीप भुम लक दधान ४९ मरुका ल ४९ कफ मि ४९ लकपा
 लरु नानिक ४९ ल ४९ कफ म न जान धाम न रुवा द न प ४९ सफ गुर्व ग व ल अदि लो न का द कि लरु ३७
 सुन वाम न व प म रुय म लु लधन ४९ रं सु व ४९ य ४९ सय रुद्र न वाम न क म न रु व ल म लु लरु
 ४९ ग ल म रु ल न क ४९ सय न क द न वाम न मान म म लु रुद्र ल ही न य न द धान धाप मी व ४९ पी न

२९

म न ध न रुद्र न ४९ रु क कपाल वा वै रु स नि लो ना ४९ कसुग कमलु लधन ४९ गु क ४९ क ४९ कम ल रु ४९ कसु
 ग कमलु लरु न क क प मी नै ध न ४९ कफ प लु ध न ४९ नो रु न क कफ ४९ सय व ड रु न सय न व क न ४९
 कै नु ४९ कफ ४९ व ज ना ग पा म ध न ४९ क ऊ न व ल रु ४९ सिन ४९ व प्र ला क ल ध न ४९ का कि ल व थ रु य क
 न ४९ व गु गु ४९ सया ली प माला वाल रु वामा ली व व क ध नू पी द धान ४९ क स न न म ध क नो लो
 न व गु गु ४९ सया ली म क न ध रु ग नो वामा ली व व क वा पो वि रु रु प व रु व रु न ४९ स न ध गु गु ४९
 ४९ सया ली व ल कपाल रु न दामा ली ध नू ध व क ध न ४९ न न रु वा भु कि न रु क क का ट क प म म ध

[illegible]

मध्वेय पीनः वनेन्दु पीनः। पूर्व रूपादया कृष्णा धिया वीरुपलरुतेन कूलरु नृस्य नचक नाहाहा
विनी पीना ऊठी दयधा विनी सयगा। अम्बिनी सिगा रुबली रुनिगा कलिका आमा नोदिनी
नक गो वा मृग निवा कृष्णः आदा पीना पनवस पीना पृष्ण आमाः अक्षुषा मुक्ता मद्या
पीना पूर्व रूपा गुनी पिर्यं गु आमा उरु वरु गुनी रुतिगा रुसासंगा विगा रुनिगा स्वास्ति पी
ना विष्ठा पा कृष्णः अनू बाधा आमाः कृष्ण पीना मूल पीना पूर्वा स्वाध कृष्णः उरु बाधा ध्या
धुवर्ष शुव आसीन गेला धनिष्ठा कृष्ण गगरिषा पीना पूर्व रूपादवपदा रुनिगा उरु वरु दः

36

[illegible]

नामदिना ॥ म इ धा व सा ह द्विर्जं म धा अं आ ॥ सर्वं न था ग ना ह द य हूं न उं हूं को ॥ र ग वा न् ह न म
रि वा गी ॥ य न म हा वा व सर्व धर्म नों ग ग ना म त स प वि भु द ध म्म धि गु ह न ग र् आ ॥ ॐ नि ह द य म
नु ॥ उं अ म ग क लु ति वि द्या न क हूं ॥ ॐ नि म ग क लु ल म नु ॥ स र्व कर्मि क ॥ ॥ इ र्ज नि य
वि भा ध न म लु ले व क य अ न स्या ए न न वा य ह त न ज ले वी स म न य वि कृ ण ग न स्य म ल्ध अ र्थ ॥ ३२
त न म लु ले वी न म ह न व क नी ले व जा व ती व त यि र्ग क षि ल्ध अ न व क नी ल मा ह ॥ अ न्य स्य स्य व दी
नी ला प र्व मा नं भु गूं द कि लं क र्थ प ष्ठि म न कं म ह वं ह नि न मि त्या ह ॥ व क स्य व द्या वि ष्य म नो ज स ह सि

हा प वि धी भा क सिं हा र ग वा न म हा वे ला व न ॥ स र्व र्थ व र्थ ध न ध र्म य क म दा ॥ यं वी न व जी उ षी
ष ॥ भु को र्ज स्य र्ग म दा ॥ द कि ल्ध न न लो षी धा नी ला व न द म द ॥ प ष्ठि मा न य शो षी धा न का ध्या न म द
या नि न ॥ उ ह न न वि ल्ध षी षा ह नि ना ॥ ह य ष द ॥ अ ल्म या न न जा षी ष ॥ सि न व क मि भु व र्थ ॥
सूर्य ह द कि ल या लि ॥ क टि ह वा म क न ॥ नै म स्या न ध ज षी षा न क मि भु क र्थ वि ना म लि ध ज ध न ॥ क न
र्या व वा य द्या न नी को षी धा न ह ॥ भा द कि ल या लि ना क या र्थ वि द्या ल्म वा म न प र्थ क ॥ ॐ शी भा ना न क
जा षी ष ॥ भु या नु जा र्थ क र्थ वि द्या ल्म व जा व ती ना व हि ना ल्म या दि को ल व ल्म स्या मा ला गी ना न त्या ॥

मीनपीनकविष्वक्कुचिउजाः। यदिष्वानस्यवाभक्षोवाधिसत्त्वास्यवक्षो। नययवर्षीयपटिकाय
 मययःपीनःस्यकनलनागकभनकसुर्मवाभनकुलीन्दधानः। अभाषदभीपीनः। भनगभाऊः
 रुदक्रियपालिः। कटिस्तु वाममूर्ध्नि अयाय ऊरुः। धनः। अकूभरुत्कनद्ययः। सर्वलभकनमानिद्यात
 मनिः। सिनपीनमिमवर्द्धुत्कन॥ स्यकनः। कटिस्तु वाममूर्ध्नि धादक्रियस्यंगन्धरुसीसिनस्यामः। स
 थनगन्धगन्धनः। कटिस्तु वाममूर्ध्नि धसूत्रजमः। गुयः। सर्वनाभिधनः। कटिस्तु वाममूर्ध्नि। गगनग
 ऊरुः। सिनपीनः। सथनपद्मस्तु धर्मग अर्धनः। कटिस्तु वामरुस्तु। हानकतुनीलः। विनामनिधनः

१०

रुत्। दक्रियपालिः। कटिस्तु वाममूर्ध्नि। पश्चिमायामस्तनयुरः। गुयीमकूटापर्याप्तनकलभरुत्कनः
 थकनः। कटिस्तु वाममूर्ध्नि। वन्द्युरः। गुयः। सथनपद्मस्तु वन्द्युविस्वविज्ञानः। कटिस्तु वाममूर्ध्नि। रु
 द्यालः। गुयः। सथनस्तु कालनलधनी। कटिस्तु वाममूर्ध्नि। जालिनिपुणः। वकः। सथनवज्रप ऊरुविः
 जगकटिस्तु वाममूर्ध्नि। उरुवर्षीवज्रगर्शनीलसिगः। सथनसर्वजनीलास्यलधनः। कटिस्तु वाम
 मूर्ध्नि। अकूयमनिः। सिगारुस्तु हानामगकलभधनी। पतिगानकूटावकः। सथनाकूटवत्त
 मकूटधनी। कटिस्तु वाममूर्ध्नि। समनरुदः। स्यवर्द्धुवर्द्धुवत्तम ऊरुविरुदक्रियपालिः। कटिस्तु वा

ममहि ४ म लुल्लुग्याग्नादिषु पृथ्वाध्वपांगश्वासितकृष्णकृष्णविना ४ पृथ्वादिहृत्तुजद्वया ४ पृथ्वा
 ववर्जाकृष्ण ४ सिगाहसुदयनीकृष्णधन ४ दक्षिणवज्रपागानीला गुजासीपागरुत्तपश्चिमवज्रसु
 धानकृष्णकनासीवज्र ४ धन ४ उरुनेवजावेलाहविगाहसुसीवज्रधन ४ धन ४ नगासुफः
 तिभदपिदवनाविविधवस्तुनज्ञानपथान्नमकृत्तिनादिनयादिगुजाविष्णुमहादेवद्वयसत्य १२
 र्यकननिष ४ १०० रुमहादेवावन ४ सारवेलावननमदिनामहादेवावननेनेवजाकृष्णदय ४
 चला ४ ११ वजाकृष्णधनपृथ्विगग्निकालसुदवना ४ नलाषेधनदक्षिणदिग्नेमनिकालसु ४ पञ्चाषः

धनपश्चिमदिग्वायुकीलसु ४ विष्णुधन ४ रुद्रदिग्निभानकीलसु ४ १०० रुद्राक्रमलुल्लस्यद
 वनासुनपटिकोयामसुविंभतिवन्दमलुल्लानिघ ४ धदिनिगनुकृष्णदिष्ठा ४ गवीधिसत्यना
 सानसंग ४ कविल्लसुनमलुल्लमितिगनुववनाद्याकृष्णगनस्यारुद्रदिनीर्यकृष्णगनमा
 रु ४ कश्चिन्महादेवावननादयानवगथागना ४ साक्षिषारिहृवमध्वनिल १०० रुद्रापञ्चावलीयविक
 विगवकुवादस्यारुद्रनेनीदिभमानसुदक्षिणावर्त्तननीलक ४ दिनास ४ गनुभानावृषहनी
 लक ४ १२ क्रीयसीपविगीसयथावृजववदमजाववामयाभिगर्लखर्ग ४ गनु ४ विष् ४ कृ ४

सथयागदावज्जामया४४खवकु॥वज्जुमाविष्णुविसुवर्णवलेनिविष्णु४४मयूनवज्जद४४
षष्ठाखावक४संवाया४४किंवज्जामया४कृष्णवज्जद४४वज्जकोमावीवज्जद४४वग॥हंसमो
नवज्ज४पीनधनुर्मख४सथया४वज्जज्जसूग्वामयादलुकमलुलूनीलवज्जधनिवुक्तेवग॥
नषदकदनीलुवज्जज्जयध४पीनाललिनासनसथकनवज्जदधन४कठिन्यरुवामहंसः
नवज्ज४वज्जमखीद्वीवज्जयधवग॥सफाधवज्जकुलुतिकाधवक४सथकनयम्वामयप्रसू
यमलुलूवज्जामनवज्जकुलुलिवग॥हंसवज्जपुलकाध४सथरुसुवज्जवामयप्रसूवज्ज४वज्जकानिर्व

ऊपरवगु॥ श्रीमानवज्रपिङ्गलकाक्षानकधस्य गुणवर्जवाभनमानुषमादायरुद्रयनि॥ वज्रमस्य
साववज्रपिङ्गलवगु॥ पञ्चवज्रसोमाकाध४पीन४भलधन४वज्रसोम्यावज्रसोम्यावगु॥ कवजगुनका
क्षालोना५जसूयकमलुलूधन४गुनवजावजगुनविव॥ पञ्चवज्रमुक्काकाध४मुक्का५जसूयकमलुलूध
न४वज्रमुक्कावज्रमुक्कावगु॥ कवृषवज्रदलुक्काकाध४स्यवज्रवामदलु४दलुवजाग्नीदलुवज्रवगु॥
वज्रनाजकाक्षानककृष्णवज्रसूर्यमलुलूधन४स्यवज्रवामदलु४दलुवजाग्नीदलुवज्रवगु॥
काध४कृष्णवज्रनागपाशधन४वज्रनागीवज्रकनुवगु॥ नञ्चगुह्यवज्रसोम्यावज्रकनुवगु॥

[illegible]

स२
ऊँ नैवग। महिषवज्र कालः का ला वज्र मक्ष्म कंधरु। वल ७ वज्र काली कृष्ण वज्र खड्गों के विजाध।
लसं नागवज्रा कृष्ण नी ला वज्रा रु वज्रा वज्र मक्ष्म कंधरु धान ४ पञ्च वज्र मूर्खी नी ला वला रु मूर्खी वज्र ख
जधना। मकन नागवज्र ४ सिगा ५ रु ५ ४ स्या वज्र वाम ना गपा ४ ४ मकन वज्र मकना सिगा ५ रु ५ स्या
वज्र वाम वज्राक्रमकन ४ मला वज्रा निलानी ४ स्या वज्र वाम ना गपा ४ ४ वगवज्र नी वज्रा नी ल वग व
ला ७ वज्र रु वानी ला वज्र गदाधन ४ वज्र विकठा वज्र रु व वन वाम नया मध्या निनी निवि ४ ४ म
षिक वज्र वी नाय का सि न गज मूर्ख ४ स्या र्णी वज्र य भु रू न। वामा र्णी पि भू ल द धु धन ४ स्या जहाय

वीनी ॥ मूर्खक पृगनी नीला स्यावर्जं वामस-माङ्गनी ॥ शीमा भ्रामसुथनवर्जं वामनद्वज्रखटकधना ॥
 श्रीगोत्रवेत्सु स्यावर्जं वामपद्मं ॥ सनस्रनीसिगा स्यावर्जं वामवील ॥ सिंहद्वज्रभ्रामा स्याथार्वज्रयकु
 वामया ॥ पद्मिर्धस्व ॥ अगनीलकलादिदवगानां दक्षिणकनेषयथार्श्ववर्जानि विभक्तिकानि वादि
 तया ॥ यस्मिन्मनागवर्जसमीपपद्मपथी सुवर्चुवर्चुरुक्ता र्यामनकलमधना ॥ असूनाभ्यनानावर्चुस
 कववा ॥ ४५ ॥ वज्रधना ॥ सरुलमृदाधना ॥ नागभ्रामसमलिरुक्ता सशर्मा ॥ ४६ ॥ लयय ॥ ४७ ॥ वक्रवा ॥ स्यावर्ज ॥
 लय्यादिभिर्जुविष्यादिनवका ॥ ४८ ॥ नेमर्थाय नगर्निष्क ॥ ४९ ॥ वायव्यागिर्य ॥ ५० ॥ नेमार्थाय नगर्निष्क

[illegible]

लिखयेद्यपि किय गभनस्य ना रोगज ना जाय विगज नरुि न वा विध्वंश ना ज व रुज अप ना जि न सी न व लुमः
 द्वेयडा के कयि लज ठाम कूट म म कं य थ क पा ल गि न गुं दं सु क ना लि नं गु नित वा उ य क्ष प वी गि ने बा प्र
 व मा र्धा न म न व गु रु ज स या र्था क र्ति उ म न ध नं क पा ल गि न ल रु द्वा म द य नो दं य र्था सी ट ना का नो रू न
 ज म न म ल नो डानी ल ४ य थ क पा ल क म कूट ४ य व र ग थ ग न म कूट पि क्ष प र्ध व द्ध के नी नी ल व म्मा व
 न ग न र्द सु क ला न व कु न क न गु गु य ४ सा द ह स म्भ गु रु जी द कि ल न नी ल क ना ल व ज म्मा ल य न वा म
 न पा म न र्ज नी ध ना र्था मा व द्ध म द्ध म द्ध गु ल्म ना मि का द य व क्षू कं व य रु र्ज नी द य क नि र्ध म म्भ मा र्ध व

गज

क्षुब्ध न वा क म दि ल न ना क शो म्भ र्ति उ ज ग ना ज वि ना जि न ४ ग गु मि ना व र्ध नं क कूट की नी ल ४ गी
 वा र व र्ण ग ज का न क ४ न न्दी प न न्दी क र्त्तु रू ल र्पी ना व क र्त्तु ग न नी यो ल व म्भ स ग म न न क ४ सि न ४ क टि
 सूर्य वा सू की लु क ४ म द्ध गु ज या ४ क य न ४ कू लिक ४ या ना व न व ल्मृ ष्य न गु ज या ४ क य न र्ध र्था ला ध व ल
 ४ नो प ना य म्भ म ल य म्भ न का व क न व ॥ प र्ध का र्ध र्ध र सूर्य म र्ध र्ध ४ उ द्ध पि क्ष क पा नी र्ध म व ल्मृ ४ य
 जा द्ध व द्वा क ज दा वि ग यी बा उ य क्ष प वी नी व रु रु ज ४ स या र्था क र्त्तु उ म न वा मा र्था क पा ल गि न ल रु द
 ध न ४ द कि ल ग न र्ध सूर्य वि र्ध ४ रु र्ध न क म कूटि स या र्था म्भ म न र्ध र्ध र्ध ना मा र्था व क र्त्तु ध न ४ पा

ग १

ज १

श्विमहं सव दवप्तासिगव्युर्मख ४१ सखाया मऊमा लाक वदलेर दामा खीपन्न कमलुत धन ४१ उरु नम
 यनसूर्य कोलिक योन क म्मि वी न ४२ सखन वामन वामन ग किं विरुलि ४३ ने भानम भव क व द ग नै य मि
 ४४ सिना गजास्य मि न वा ४५ वे च ल ख न ४६ व गु रु डा सखा खी म ल क य भु वामा खी वि भू त क पा ल विरुलि ४
 ॥ आ ल म य सूर्य म लु ल आ दि ला न क ४७ सखन वामन व स ना ऊ रु सूर्य म लु ल रु नू ने अ ल य थ रु सूर्य व द
 ना ४८ न क रु ष क ल री (ग द्ध क ल क ल त्थि क त व द्ध रु म रु ष रु द्ध वि दा नि ना स ४९ क ना खी रु न
 व द्ध सूर्य य क्तां ज ति ४१ वा य थ व द्ध न दी पी गान ल न म द्ध व द्ध ल ष नी वा द य द्ध प वी नी सू ये न ना खी उ म न

वि ४१ ल रु ग्गा दि नी य पृ थ व् व स्या नि मि व द्ध गी ४२ का द य ऊ र लि न प द्ध प षा रु ग्गा द कि ल स्या व द्ध वि ला
 रु मा न का व पृ थ व् व लान रु नी य प षि मा या च द्ध ४३ नी न का दी प रु स्ता ल रु ल स्या व द्ध उ मा पी ग
 म द्धि रु ग्गा का व ल रु न व प नी ग रु स्ता न रु नी ग्गा ल ने य वि द्ध व ल ग च रु स्ता न रु अ स्या व द्ध स व स नी ४४
 मा वी ला वा द य नि वा य थां व द्ध स व स रु नी क रु व ल मा ला धा वि नी ४५ म ना मि द्ध वा रु नी पी गान
 रु वि ४६ क व जा क क व की स ल या ४७ नी य पृ थ व् व स्या मि न ना व न व द्ध स रु मा रु ४८ पी गान ल म रु क टि
 स खी ना रु य द्ध वामन व जा य ध ४९ द कि ल स्या मि रु ष सूर्य य म रु रु मु दी क पि ला रु ४९ उ म रु रु रु ४९

नवस्तुं सद्यो न कया लीकि गदलु र दामे ४ स ग ऊ नी पा म ध न ४ प म्भि मा र्ग उ ऊ ग व ड व न ४ सि न
४ स फ रू ल्म वा भ न ना ग पा म रू न ४ म थ न व ड ४ उ रू न र्णी य ऊ व रू ४ क थ न ४ पी न ४ पी ना लः
भ्वा द ना न ल म कू टि सु थि वा र्णी ग द न कू लि ध त ४ अ ल न पी कू ग स र्ग अ ग्नी न कू पि ज ठा क ल क पिः
ल ४ कू म म्भ गू ल भ्वा द न मि य लु ४ य ह्य वी नी स वा र्णी व न ४ कू स ग ध ना वा मा र्णी नि द लु क म लु तू रू
नू न नै र्म र्णां व गा उ स र्ग नै र्म न ४ कू स स थ न द व भ्वा भ न मां स य रू क पा ल द धान ४ क पि ता रू वि नू म्भ
४ ४ वा य र्णां मृ ग डो वा ना नी ल मि वी व त ४ क ना र्णी वा न पा म रू न ४ नै र्म र्णी रू स व ड व ड ४ मु थ वा म

[illegible]

भस्मकल (भा) शोण ४। रुगवनाह्वी जं हं हं वज रुति मिह दयं ॥ ३८ ॥ गजामनरु नाधियति अजायाकि
 नीटिन सर्वरुगपुनपि भवानसाधय हं रुटि मिवा ॥ अर्यं भवमनु कसार्व कर्मिका विद्या न कमः
 श्रीवा ॥ ३९ ॥ यच्छक कमलु तं वज रुत्यादिकं कूटागमलपय नयुधमम इव रुममुत ॥ ४० ॥ गजम
 ध्व कूटागमनस्यम ध्वरुगवान् वज रुक ॥ पूर्वोदिदा नष गौर्यादयने भानादिका लषप कस्यादय ४
 ॥ गजु लो नीसिगता भयना क्क भधनिनी योनीपी नापा भधना ॥ वरुतीन का रुजा र्ण रुटरु न ॥ यः
 स नीरुचिगा वरुय न धना ॥ पूकसी नीता वाधिविरु य ट रुसा ॥ भव नीसी गामन धना ॥ वरुतीनीः

१४

१५

लावगि कुरु रुग ॥ अग्निनी विध्व वरुम रुध जप नाकाध रु ॥ पूर्व कूटागमनस्यम ध्व वरुध वरुध जक
 रुकोस्यम लम र्व कर्ष वामन कं ॥ लषास्यानिनी तानि ॥ दकि लीष कया लष मय नम रुिषम कमीन गज कं
 म लष नाग रुसा ४ ॥ वामाष कया लष गम धा क्क सी रुता रुता ॥ रुनां लम षि कस्यम नीग नीवा न क ॥ यः
 वीदिदा न लष भानादिका लष यथा कर्म दय ४ ॥ गजु स द सानी ला रुदं भ रुसा या छिनी पी नापा भ रु न
 ॥ वागु नान क्क वागु न जात धा निनी रुचिगा रु क्क भ रुसा ॥ यषा रु क्क षा कल रुध ना ॥ धया क्क षा प
 कट रुध ना दीया पी ना दीय य छि रुग ॥ ग धा पी ना पी न ग ध य रु म रु रुसा ॥ दकि लम रुत स्यम ध्व न ल

। वामसिर्गल्लानिनीलानि। सव कलष वृधदरु स्यात्कंठु नाहमङ्गल मुकुमनेभ्य नविष्व ४। वामसि
उवन्नन्रदकामदववलरुदङ्गनकवमविश्वतयशोधन न्द ४। पाथ ४। पृष्ठादि द्वा नैषी भानादिष्व
दवना ४। गगनालिकासिगा। गालिकाधना॥ कृच्छीपीगा कृच्छिका रुक्मा। कपाठ नका कपाठधना। पि
ठधानिनी कृष्क नासांकोलुपटीविश्वती। लाच नासिगावकधना। मामकी नीलावज रुक्मा। पाथुनावका ६०
पद्मपाणि ४। गानाहनिगानीलायलक्ष्मिनी। मरु कृष्णगभनस्य द्वा नैषी भानादिष्व लोयादय ४। पृष्क
स्यादय ४। पाथवन्। ०० रुवज्जक असनवर्धुसंस्वनवकुमुजादिरिन्न वाम् कुरु कमु लयथाधुम

मुज रुवज्ज अलिङ्गिगनेनासापिगथा गवकादिज कामु वलावउ कवि लक्ष्मिना नैषी वज्ज कसमाः
४। अलिङ्गि नदय रुष्णीयथा कुर्मलाचना मामकी पाथुना गानासिगपी गव कुरु निगा ४। कलि नर्तनीय क
उज दया ४। पश्चपिठ का ४। पृष्ठादि कवृधम कृष्ठी ४। सर्थवृत्त कृष्णवृद्धयान गमावक वकु लविनगद
कृष्क नासं कवकुदि मुज रुवज्ज कपिल कृष्णला ललाट नट रुय कृष्ण सगलावतमि मु कनृमः
मालापश्चमडा रुष्मिगा विष्णुपद्म भवसूर्यष्य लालीटन नृय ना वि लक्ष्मिनावय न द्वादि वाम मरु निगर्तु न्या
नर्तुय ४। अलिङ्गि नदवीना कुनयथ गम सनी लोयादय ४। नायथा कुर्म वृक्ष पाथुन दयम कुरु वने

अग्नितमविशिष्टः ४१ वरुणोऽग्निपुत्रः ४२ कालाग्नेर्यदियं भवज्जकारि मरुता ४३ अन्यदयस्व स्वाधिय
 हरि मरुता ४४ रुद्रजस्य मूर्ध्नि वज्ररुद्रं वज्रं दानकोलद्वीनीं पुत्रि ४५ अथ नत्तं भामिना ४६ अथ न
 स्य च कुधन ४७ अथ कुधनकोलद्वीनीं विरुत्ता मिना ४८ माघसिद्धय ४९ वज्रसूर्यस्य नत्तं नत्तं पालिम्भि
 नाम निम्बद्वानकोलद्वीनीं कायविहामिना ४९ माघसिद्धय ४९ पद्मनृत् ४९ अथ नत्तं पद्मनृत् ४९ पद्मनृत् ४९
 दानकोलद्वीनीं कायनत्ता ४९ माघसिद्धय ४९ पद्मनृत् ४९ अथ नत्तं पद्मनृत् ४९ पद्मनृत् ४९
 विहामिना ४९ माघसिद्धय ४९ वाक्कालोऽग्नेर्यदीनीं पूर्ववत् ४९ वज्रज्जकारि यथा कर्म दद्वी जानि ४९ ॐ ॐ ॐ ॐ

[illegible]

कर्मभुतशायमथवासीहवमिलुतमिति॥ ॥षट्चक्रवर्णमभुतवज्ररुमादिदभानवकपर्यन्तयथा
 मभुतवज्रमभुतदभानवकस्यदभकोधायननेतायविजयकाधमभुतानकावज्रदभुतदयावज्रपाग
 नृपर्यन्तानविजय॥अस्यदभवकस्यनाखनद्धभादयामल्लनितानतजलरुममहीमभुतसूमनः
 पवित्रिभूमिभूतनालीमहाकूटागभवंधमीदियानासीनियकाकनवंमहाकूटागभवनारिरु॥८॥
 गभनमल्लसीनसिंहापनिविभसनाजसूर्यमभुतमध्वसूवजसत्त्वविहावरीदयारिधनारुवाक
 त्वाग्नसूर्यसूत्रवगोशयपनिवज्रपर्यन्तनिषत्सिंहानजकावज्रसत्त्व॥९॥गभ॥८॥कूटागभवनवज्रयध

८२

सद्यगभकवकादिगभवीक॥साभुतवज्रगर्जनीक्रोयगभकवावज्र॥पर्यन्तकपालरुचालिगितवा
 मभुतानकभुतानजकिनीवज्रधालेधनीगिवज्रवावाहीगिवायवनामध्वया॥अग॥८॥पर्वीदिगादिदक्षिण
 वर्लनवद्धजकादीनीपक्षनीन्यामसूत्राविवावाभांमुपनिमभुतंयष्टीदिद्वावष्वामावर्लनाग्न्यादि
 विदिद्वदक्षिणवर्लनवज्रसत्त्वस्यविदिद्वयथाकर्मजकिनीतामाखभुतवाहानृपिन्यानीलपीगनकः
 हलिगाअलीरु॥१॥वावष्ववभुतकपालमहाकंकातविकटदक्षिण॥८॥सूवज्रयध॥८॥रुमासीथव
 भुवभुतीयरावनीमहनाभा॥८॥मसूत्रवभुतअलिगित॥१॥गगावेत्तवनरुटागभनस्यमध्वसिंहाप

विविधप्रवृत्तयस्तु वृत्तलादिदिवजपर्यक्षीवृत्तजकः ४ भुजः ४ वक्रचक्राकं घञ्जरसुयवामभुजार्ति
 गिनगिनवृत्तजकिनीकः ४ द्वात्रिंशत्सूत्रावेयमिगारवजपुरुवजदहा ४ ८ पञ्चमः कचक्रघञ्जरसु
 जार्याविलमोर्गैरवर्त्तनीलं कश्चनीदमेकया ४ पीगाज्जलिगन ४ ४ नलेमकृदागमनस्यमल्लगुनजो
 पविविधप्रवृत्तयस्तु दिवजपर्यक्षीवृत्तजकः ४ पीगः ४ सयवामभुजार्तिनलेनलेकचञ्ज ४ ३
 र्यामार्तिगिनपीगनलेनजकिनीको द्वात्रिंशत्सूत्रावेयमिगारवजपुरुवजदहा ४ ४ पीगाः ४ सन
 लेनलेकचञ्जसार्याविलमोर्गैरवर्त्तनीलं कश्चनीदमेकया ४ पीगाः ४ सन

गलस्यमल्लमयनापानिविधप्रवृत्तयस्तु वृत्तलादिदिवजपर्यक्षीवृत्तजको वक्रः ४ घञ्जपञ्चाकचञ्ज
 विगिनगिनवृत्तजकिनीकः ४ द्वात्रिंशत्सूत्रावेयमिगारवजपुरुवजदहा ४ ४ पञ्चमः कचक्रघञ्जरसु
 ४ सयवामभुजार्तिनलेनलेकचञ्जसार्याविलमोर्गैरवर्त्तनीलं कश्चनीदमेकया ४ पीगाः ४ सन
 लेनलेकचञ्जसार्याविलमोर्गैरवर्त्तनीलं कश्चनीदमेकया ४ पीगाः ४ सन
 लेनलेकचञ्जसार्याविलमोर्गैरवर्त्तनीलं कश्चनीदमेकया ४ पीगाः ४ सन

उपनि०॥ अभाघसिद्धि कृष्णगन्धमल्लगन्धपवित्रिध्वजसूर्यरुद्ररुद्रदिवजपर्यङ्कीविध्वजक
रुद्रिग० सयवामरुद्रास्त्रीविध्वजविध्वजकयन्धविनास्त्रीमालिङ्गितरुद्रिगविध्वजकिनीक०॥ द्वा
वषट्कपञ्चनखध्वजवैश्वानरवजसत्वारुद्रिगविध्वजविध्वजवेद्यन्धस्त्रीध्वजकनास्त्रीसूवीन
महावलात्रकवर्हिनीमहाविर्याधूमधूसनवर्हउत्सर्जयनिभचतुर्वीसतिवीनाज्जलीरुद्र०॥ ०॥ ६४
जकिन्नादिवगन्धावभनकपार्त्तखर्वांगकदक्षिलनउमन्नविरुह०॥ हनजकिन्नावभुदीनीवी
घनदक्षिलकनवजगर्जनीकद्विजजकिन्नावीनमहादीनाकवकुगर्जनीवचनजकिन्नावेनाव

ह्यादीनीवसननगर्जनी॥ पद्मजकिन्ना०॥ अभादयादीनीकसपन्नगर्जनीकवजजकिन्नाध्वकव
गदीनाकसवजगर्जनी॥ विध्वजकिन्ना०॥ स्त्रीवीनादीनाकविध्वजगर्जनीवसर्वासामपिह्ननजकिन्ना
दीनामालिङ्गनेवामकवषट्कवज०॥ पशुकपालानिमहामुत्तस्थदावषकाकास्याडरुकाग्न्या
स्याग्निकवास्यानामानरूपवकुयथाकमंतीरूपीगन्धकुरुविगाज्जमयाग्निरुद्रगन्धकुः
जा०॥ कोलषयमदादीयमद्वीयमद्वीयममथनामानवीमखा०॥ सयवदवीवर्धुसयवगवीना
द्विद्विद्विषवीनागन्धमस्त्रनसराजनरुद्रसयवका०॥ अष्टवधीमा०॥ कपालखर्वांगरुद्रामुद्राज्ज

लीटसु ४ षष्ठु मपि कूटागमनां कां लषु कादिपुनिकया लानि विष्णु कस्यै निजा किन्ना दया
 यममथनी पर्यन्ता ४ विष्णु कस्यै सुर्वेषु ना ४ स्वकवर्हि नापि भवसु ० निपजा नवै दवना पश्चा
 न्दवत्तुवा सुवर्मवमनाव नयक्षयवो नागलावती विसा द्वमलुमा ला ४ कस्य जठम किटि नो दवामु
 नेमाम कस्य कस्य कस्य नागलावतमि शु कस्य लुमा ला ४ द्वाव त्वा विमदपि दवना दि कुजा विन कु कव
 कवजमा ला कस्य ताप निव नय च कया ला ४ कय तय र्ध नादि रिर्मलु ना ४ पश्च म् दि ल्प ४ स्वकवर्हि न
 ४ पश्च म् दि ल्प म ल्प द्वा विष्णु वजा क जठम कूटा ४ स्व स्वक म् दि रिमत्वा ४ लु मि म द्वा म म् वः

८७

क म् दि रिमत्वा सु प च्च स्व कवर्हि न ४ का का दया ४ वी नां सु स्व स ह्म रिमत्वा ४ न व म य म क ४ प ४ ४
 द्वा कवर्हि नाया लीट व न्म ० नि विष्णु ना न्म दि नी य व ४ न न ल य ज द य ४ पि ह न न का व द्वा न क ४
 न याम लु ले या ४ म् दि रिमत्वा वि व ल्प ज क स मा लु ले या ४ न व ल्प म य वि ४ प ज ज क स मा लु ले या ४ म य ना
 प नि व ज ज क स मा लु ले या ४ म् दि रिमत्वा रु ना ४ विष्णु ज क स मा लु ले या ४ म ग नू उ वा रु ना ४ न न ह्म न न
 का द या व ज प र्था कि न ४ का का द या ४ ह्म दि क पा ल्प ला लीट स ० नि ह्म नी य प ४ न व य ४ प ४
 न व य ४ न न का दी ना म क म् दि रिमत्वा व लु लु ज्वा दि कं पि म् दि रिमत्वा व लु लु ज्वा दि कं पि म् दि रिमत्वा व लु लु ज्वा दि कं

८८

[illegible][illegible]

त्वमिति न न का भावः समानं नृपा ४ न का वक्तु स ना स न न धर्मा दया । य इकं विमत पुराणां वा क उ त्थरि
 निमित्तमन न का का भावः गु न ध्या त्मनि पु ह्ना धर्मा दया गि का त न गि । अ का भावः गु न वरि धर्मा दया नृ पा राः
 व न म नु ल धर्मा दया या म ध्व वा य स क रू या य थ थी मा का भा दि ष्व द लु ल स स म न वि ध्वा क व न सूर्य नीः
 ल वि नृ प न दू म नु ला प रि सि नं वरि ष्व ज वि न का भा नि त्ता न ल स लि ता वी व ल य प नि क वि नं म ह्ना क
 ७ ग म नं अ थ वा न का व कं वि ध्वा प म म न प या क न मि नि वि घ्न या ता न न न म वि न यि त्वा धर्मा दया च स
 वा य त्वा न का प अ न स न न अ का भा न द्वा म्वा दि म ल ता नं न दू म नु ल य र्का ना म प लि सि नं वरि ष्व

[illegible]

[illegible]

रुलकविकमिगमस्वस्वर्वांगेन कपर्कपातकरवकषकादले ४ पा ८ मासि नर्तय पुत्री कच १ ८ कषर्गः
स्वदर्या लावजर्गस्वलाव क्कमि नभ्य उन्न ४ परु मि न क व भु द क्रि स व न न ग ल न न क व लु न द या का न ४ क
मद वा न क व लु न क व कु ४ प क प ष वा ल ध न ४ पा मा क ष न भ्य गु कु ४ ॥ उन्न ४ परु मि ४ ल ध न वा म पा
द ग ल न भु र्क न द या का ना नू ४ ४ ४ मि ने क व कु मि ग ल म न क पा ल स्व द्वा क रु र्व गु कु ४ का म द व
स पा ल ध न मि म रु ध न स लो नी ॥ उ न द यो दी न व द ने ध न रु ग व च्च व ल ॥ रु ग व ना सि जि ना गु वि ध म
ना प णा ली रु रु सु व भु व भु द क्रि स क र् ४ क र् ली का क ष म नू अ ऊ स गानि वा मे ४ म कि पा म प पु नी कः

वत्तानिविजगीर्णैर्देवतकृष्णदीपकृष्णसुखरुक्तेष्वपकृष्णवज्रपागुंकं कूमपागुंककृष्णसहिगकय्यः
नपागुंवामेयधयज्ञसूत्रनगनूकर्मनानापूषामाताचरदधनादक्रिलवकदीफानेकभयोदीपरा
वंमकूटंकटकचरवामेर्वर्मभरवलावतकृष्णुतंनपूतं चविजगीर्णयश्चिभपीगदीफापीगासुयोः॥
इववल्मसर्तुमनूचरवामेवीलाटकाकसिकाकारुतकाविजगीर्णयश्चिभपीगदीफापीगासुयोः॥
पागुममूपागुंदिथोषधमयपागुचरवामेनमृगपागुंसिद्धवसपागुंजूमृगरुतकृष्णपागुंवविजगी॥
आग्नेयादिषधमामवीवीपुदीयास्वशागादशायथाक्रमकृष्णवकपीगसिगवल्मुः॥६॥

वामनधना॥१॥गासीपुषतीवहिरिस्थितामनिधर्मगलीकल्याणधर्मभंखानिकृष्णवकपीगसिगानि॥कृष्
दीफादया॥२॥समपदसुखासर्वाविध्यमातादिदव्य॥३॥यचमूदिना॥४॥जुजादादमलावनाध्यगुवका॥५॥न
गपूर्वदक्रिययिभारुवकुममखानिनिविध्यमागु॥६॥पीगमुकनीलवकनिचवंपीगानोदवीनीकृष्णनीगुः
कृष्णवकपीगसिगानि॥७॥कानावकपीगमुकनीलानि॥८॥सिगानासिगकृष्णवकपीगानि॥९॥दिनीयरुगी
यपूटशादवमानवनयनगिवदना॥१०॥षडुजा॥११॥गुपूर्वस्यादि॥१२॥अभाद्यसिद्धि॥१३॥कृष्ण॥१४॥कृष्णवकसिः
नवदन॥१५॥सुयो॥१६॥कवे॥१७॥खजकहृदि॥१८॥लानितवामे॥१९॥रुतककपालखद्वाजनिदधनालावनासिगिन॥

[illegible]

मिगारुसन्निरा४वेवाचनामिगारुमाघसिद्धिबलसम्पुर्व४समापना४॥गात्राया४स्वर्वांगसुनउत्पलः
म्या४अष्टकआष्टवसुगकलभा४॥रुगीयषुटपाटिकोयीपर्वधानस्यवामपा४वसमकुरुदानील४सथी
वज्रकलुर्भयेनवामेध४कपालवज्रसिर्वाभिदधान४वज्रसिन्धुनउत्पलम्वा॥धर्मधामुवजासमापना
यीदक्षिणस्वगला४माघसिद्धिवग४गन्धवजालिङ्गिन४॥दक्षिणद्वालेस्यवज्रपालिविहविन४सथीवज्रकलु
पथन४वामेध४कपालवज्रसिर्वाभिदधान४वज्रवजालिङ्गिन४॥किनिगर्लनलसम्पुर्व४रूपवजा
समापन४॥पञ्चमधा४स्यधर्मधामुवजावज्रपालिवग४समकुरुदालिङ्गिना॥सर्वानववयवविष्कम्ही

वेनावनवनासर्गवजागुष्ट ॥ उरुवद्वानस्यनयवजासमकरुडवनावज्यानिनारिगिगा। लोकभ्यव
 श्मिगारुनिरेवसवजालिङ्गिगधाविदिग्धा। नर्यासर्गवजगाववसर्वेनिववलीविक्रि। नसमोपना।
 नमर्थावभवजाया। नवलोकाभ्यनारिङ्गिगा। वाययौगन्धवजातावनवस्वगर्हालिङ्गिगा। वेभानावप २१
 वजामामकीवाङ्गिगर्हालिङ्गिगा। अगामीघसिद्धादयस्त्वथगनोवाधिसत्वाभ्यवजासनस्त्व ४ नावादे
 य ४ पद्मासनस्त्व ४। पूर्वद्वान्शिवतत्त्व ॥ १॥ माघसिद्धिवन ॥ सुसुकीसमाश्रित ४। साकुलावनवदक्षिलर्क
 रकावलेनवनमामकीसमापन ४। साकुमामकीसमापयिषमसुसुकीवेलावनवदनिवतारिङ्गिग ४। सा

तुगावव। उरुवमानकाश्मिगायविजसुकीसमारिङ्गिग ४। साकुपा। नुनासमा। किंलेनकाधआलीरुस्त्व ४
 काधदवाकुपलालीरु ४। अगर्पदवगानामासन ॥ १॥ नयधसूर्यस्त्व ४। अदवतानावकाडसवन्दमलुता
 निगअथवाकृष् ॥ १॥ नरुविगाभन्दस्त्व ४। नकापीगा ४। समकरुड ४। नयवजाभ्यसूर्यमलुलस्त्व ४। पीकिसुकी
 विमलपुलाया ॥ १॥ नरुयगुस्त्व ४। नयादवता। अर्गनेसापुधानत्वावेकभाहिसरवीननुनइतीगस्त्व ४। नरुय
 नुदवीच ॥ १॥ नमर्गिवादिक्करवकुपित्वापचरविंभगात्मकविरुमलुल ॥ १॥ नरुयगु ॥ नगीपावहोपिरु
 गवान् ॥ १॥ नवनीशोसमाजवन् ॥ १॥ नदेकापीपूर्वसीवामस्यनानरुमलुल ॥ १॥ नरुयगु ॥ नगीपावहोपिरु

इव रुक्मासय ससय मातानी ता गृही गक सम माता दक्षिण स्यांधूपात्र का धूप कट रुक्मा दी पात्र का दी
 पया विधवा पात्रि माया ला भ्यापी नापी नम कट रुक्मा हा स्यापी नापी गला वेधा विनी उरु व स्याम मृता
 ने वया पत्र नाम धया सिना सिन रु रुक्मा रु ला क ना मु न रु रु स्य पत्र नाम धया यि यूप प र्ण पा ग रु रुक्मा
 सव्वी सुव व दी धर्म र्या विविध धा वि न्ध ४ पूजा दया ४ पद्व ना व न स्य पूजा दवी रु न नृ ह्या नी ला नृ ह्या रि न य २२
 गृही ग व मु दक्षि न स्य का मा व का प अ रु रुक्मा पात्रि म स्य वा या पी ना प न रु वा द य नी उरु व स्य गी ना मी
 ना व रु धा वि नी अय म मृ ना दी नी न्वा स रिष क पट र नी का क म न य रु क सा ध न पठ र नी का र्या उरु

व स्या वा या नृ ह्या अ का ल गी ना का मा अ ध न वे व या अ मृ न रु रि नि ग ग पि ल क पट ला क न्या म न व वे दि
 ग द्य रु द न रु रु रु य न य अ न थ प र्वा य न वि बा ध ४ स्या दि मि नृ ना द्वा द म द य ४ य द्वा स न रु ४॥
 ॥ वा द्वा लु ल दि रु अ रु नि व का नि को ल ष गु कानि ग म म मि न वि न रि न ष वि म स्य प द न रु ना द य
 ४ ग ग व क य ना प वि रु ग य र्वा रु स्य क र्ति का र्या वि र्चि का रु रु नि न र्ग क व का स वा र्या क र्ति गि मू ल वा मा
 र्या क पा ल व द्वा क वि य नी ०२ द्वा रि जि ना य र्वा य मू द ल ष र्ही मा उ ग्रा का ल दं रु रु ल द न ल म र्वा वा य व ग म प
 व लु नो दा की रु रु ल ना सा ४ ग व ग प लि रु ना ल न या रु रु व न रु क वे र्वा रु रु स्य यो म्भ क ग दा वा म या

४५ अक्षरं चरुं कलितं जिना ॥ दत्तं धृष्टीर्माया कीर्तिं लक्ष्मीं विजया श्रीं जयन्ती श्रीं वकी वमरुषा पवि याम्य
 पद्मस्य कर्तुं काया वा नाही न का मूलमखी सुखाय दलुखलौ ॥ वामया ४ मृद्वलुखलुका नडातिं गो ॥ दत्तं कक्षा
 कातनागी पुकपित वदना का लकिक्षा कना लाधाता विनूया ४ मयू भापवि नमसा दस्य कर्तुं कार्या कौमा
 वीनका षल्माखी सुखाय ४ मर्क कौ ॥ वामया नलपा ॥ गालसममापना ॥ दत्तं धृष्टपद्मा लका कमा नीमृग
 पतिगमना नलमा लासुनया की ना रदाव ॥ ने ना वला पवि पश्चिम पद्मस्य पक्ष नले डी य ना सुखाय वज्रवाः
 ॥ वामया धर्मा वायो ॥ ने मसा ति जिना दत्तं धृष्टवज्रगर्भ विजगता कलकवनी उर्वमी विवतखा नरु ॥ रुन्मास

२२

गा वावा ॥ दत्तं धृष्टपद्मा लका कमा नीमृग
 पुत्र विष्णु नासमापना ॥ दत्तं धृष्टपद्मा लका कमा नीमृग
 र्क वमनी नरुस्य कर्तुं काया नोडी मु या सुखाय मि मूल उम न वामया ४ ख द्वांग सयायि मा मि ४ दत्तं धृष्ट
 नीगंगा निर्या लो विना गो न ना लक्ष्मी पि कला क सुवा सि हापय मना कस्य कर्तुं कार्या लक्ष्मी ४ मु क्री सुखा
 या ४ पद्मा कस्य वामया ४ पद्म नले कार्त्तिक या ति जिना ॥ दत्तं धृष्टी ॥ धृष्टगा वलुखलुका ममधलवदना र्क सवः
 लुधु निधय पद्म मा गा वा नल नगा विमल ममध वाव नगा धर्मा काया वा सफा नि देवा धृष्टगुठु जा मि नगा ४

अणुदलदशाततिगयदसु ४॥ सुसुनायिकागुत्यावर्तुदिरि ४॥ सुसुनायिकीयध्वन्य ४॥ नायिकाश्वेविभासवपः
 दसु ४॥ कर्मगारिबहुरिवातिंगिनविभासवयदसु ४॥ अनलायकासुदरिमखा ४॥ कायमधुतयदिकासु
 दादभायझानिबुद्धसूर्यबहिनानि न गुदिकयझानिबकानिकोवसुनि ४॥ भगानि ४॥ एतद्वदतानिपुथम
 यविमधुतु ४॥ वताविद्वनीय ४॥ हनीयाध्या ४॥ भगवत् ४॥ यविमधुतु ४॥ पर्ववगदलात्युगिदिकि ४॥ वः
 हनयमियादिनिधिदवीन्यास ४॥ कर्त्तिकायाकुपुर्त्तिमा ४॥ मावासावनायकलेनस्मिता ४॥ नगपुर्त्तिमा
 यहा ४॥ अमावासा ४॥ रूपाथाने ४॥ सादि ४॥ सुर्वीधनदवना ४॥ कुर्त्तुजा ४॥ नगपुर्वद्वानस ४॥ ययदलानकुः

२४

युगापविषयस्यकर्त्तुकायानेमि ४॥ रुक् ४॥ सवया ४॥ खजकलीवामया ४॥ रुक् कपातचकलदनतमख
 नाकसीसमालिङ्गिन ४॥ अस्यवेगुनिथय ४॥ अलग्नयमृगपविषयस्यपुष्कनवाय ४॥ रुक् ४॥ सवया ४॥ कत्य
 क्रम ४॥ पाविजातपुष्प ४॥ वामयावि ४॥ नीलात्यल ४॥ पुवकुलिङ्गिन ४॥ अस्यवेभासुनिथय ४॥ दिकि ४॥ वः
 नस्यवाममहिषापविषयस्यकर्त्तुकायांयमानक ४॥ कोलीसमालिङ्गिन ४॥ सवयादलेखजावामया ४॥ मृ
 खताया ४॥ अस्यरु ४॥ ननिथय ४॥ सवामहिषापविषयस्यकर्त्तुकायां ४॥ अग्नीवकावर्त्तुभालिङ्गिन ४॥
 सवया ४॥ मकिदल्लु ४॥ वामयापयकमधुतु ४॥ अस्यध्व ४॥ निथय ४॥ नेमस्यमय ४॥ पाविन ४॥ नाजस्यपुष्कनव

मूलावकवर्तुः ४४ गवयाः ४ मकिं कुनो वामया नवदण्डो लो लक्ष्मी समापन ४५ अस्मावाट निथय ४॥ पश्चिम द्वा
नस्य वाममर्ग कापनिपन्नस्य वनट क कुर्वन् ४५ पी न ४ को र्यो नी समापन ४५ सयथा मर्लिन त्रगदा व वामया ४५ न क
लपद्म ४५ अस्मापोष निथय ४॥ सयग कापनिपन्नस्य वनट क कुर्वन् ४५ पी ना वा सवी समाधि ४५ सयथा र्ध ऊ मग्निः
वालम्ब वामया र्ध न्ध नू पी ॥ अस्माग्नि निथय ४॥ वायव्य रुसापनिपन्न क कुर्वन् कार्या वृक्ष पी ना विद्यु
दालिजिन सयथा ४५ अस्मिन्न ऊ पासू र्ध वामया ४५ पद्म कुर्वन् ४५ अस्माकार्त्तिक निथय ४॥ उरु व द्वा नस्य वाम
वृषलापनिपन्नस्य कर्त्तु कार्या नू ४५ गुर्वो लो नी समापन ४५ सयथा ४५ विष्णु लवा लो वामया ४५ सयथा विष्णु

२५

नखदा ऊ धन ४५ अस्माग्नि निथय ४॥ सयथा मक नी पनिपन्न पी अस्माकार्त्तिक कार्या सम ४५ लव न ४५ स
यथा ४५ पा म न त्व वामया ना ग पासू र्ध क क मर्लिन व वा नी समाधि ४५ अस्मावाट निथय ४५ ने म
नमूष कापनिपन्न कर्त्तु कार्या गत्व म ४५ सिन ४५ गवया ४५ पद्म वृक्ष वामया ४५ पा म न त्व को मा नी समा
पन ४५ अस्मावाट निथय ४५ पर्व द्वा नस्य वामग न्ध कापनि क म ल कार्त्तु कार्या विष्णु ४५ रु ४५
पी समापन ४५ सयथा ४५ क ग द वामया ४५ पद्म र्ध र्ध ४५ अस्मावाट निथय ४॥ उरु व द्वा नस्य वाम
लव गोदि निथि द्वा ललिन पद्म ४५ अस्माधि पनिने अ ला दि र्ध वृक्ष र्ध र्ध न ४५ समा ल न य ४५ अग्नि

तदुमसुतसंनैवातिंगितास्तानापर्यवधावसफकृष्णकवेनकमानकृष्णवथनीतदलुमायसिद्धिवन
 अननातिंगितामाविचीयीमास्येकवासीवकदलुमायमासीमंदववदधनादकिंलसफनकृष्णः
 नकनथटाकिवाजावतमवगानननातिङ्गितावन्नामुकासयासीमङ्कनकनीवामासीपद्मादलीव
 आत्मापश्चिमसफापीनवंगरुपीनवथमहावलीववावनवगानननातिङ्गितावजुर्गुवताकृष्णस्य
 र्णमनिकुलितावामासीकलमस्यीविजुनीतडरुनसफसीगसिंहसिनवथअत्रतामिगारवग
 अननातिंगितासमकिंनकासयासीवासीकलोवामासीकादनुयालोदधनावकमसाधमाकालो

विनगुपयवर्तुगवृत्ताक्रमनरुविनवथडकीषवकवर्तुवजुपालिनिवास्यपुद्गागिनीलानीतवर्तु
 सयासीकलिंवजुवामासीकपालपल्लवधनावकमसाधमासागातरुपादसफकृष्णमइतक
 नवथसर्वावाजुसमनरुडवगानस्यपुद्गावाजीरुविनासयासीपुर्णविभूतवामासीनाग
 पागंदवधाकेचविजुनीअगुनीतदलुदिक्काधनथापविनिगपप्रसूर्यछासीरुसनायकासखन
 रुत्यागवकर्गपश्चकिमावीयादयमुपुलासीरुअनतापिक्कापवखनगममागुकाधाः
 न्यस्यकिअगवथनाकृष्णदिवर्तुर्वरुविगुतवमस्यननादावमध्यंरुननपुनिपोदिगंन

दनसा नारु कनादीनामपि गावतसु मनाम (ध) वदी सु नडु मधश्च लिन ४। गगपर्व दानस्य वाम
 दक्षिणया वायुमनु तथार्यथं सख्यं यद्र कर्कटको कृष्णनासाका का ग्या लिङ्गि नो। दक्षिण दानस्य
 वक्षि मनु तथार्य सु किर्गवपा लो न को सु कनासा गृध्रा सा समा यत्तु पश्चिम दानस्य पृथी मनु तथार्य
 रुकमलय द्रपी नो रुक्का सा ष्टु ॥ ३८ ॥ उरु न दानस्य रुत मनु तथान रु कलिको नु कृत्वा घ्रा सा उरु २१
 का सा लिङ्गि नो ॥ ३९ ॥ उर्द्धा का ल म न्य मनु तथारु नि गानी ता लिङ्गि न ४० अध ४ या गा ल म न्य मनु तथारु वि रु शा
 नी ल वजा श्री समा यन् ४१ सव नो गवजा सन सु ४२ गु रु जा ४३ स्या र्थी म मृ न घटं वरु व वा सा र्थी य न न

त्रि वि जाल ३। पृथी वत य वि दि लो म नाम दय त्यु वि मा च न्य मनु तं ने ज ह्या म रु ग रु न स र्य ४४ अग्नि वायु व
 त्र यथा म ध मा रु मी म न स स न व का नि दि रु न का नि वि दि रु मि गो नि न ग प र्व व रु मी ना सा रु रु द क्षि
 ल से क ना सा न का र्थी पश्चिम रुक्का सा पी गा उरु न द्या सा सि गा अल न या दि ष का का सा गृध्रा सा ग न रु
 सा उरु का सा ४५ रु रु न क पी ग सि गा ४६ उर्द्धा का ल न थ नी ल व रु ४७ स्या न थ शि नी ला या ४८ अध ४ या गा ल
 न थ व जा श्री रु नि गा अ सा न थ य थ नो डा श्री ४९ व गा ४९ ना सा द या म नु त्र य द न सि गा ४९ पा गु क य
 द्रा दि रु ना लिङ्गि ना ४ क र्क क पा ल रु न स थ ग न क न द या मि न गान ग न ४ प र म दि ल्वा ग ला व स म्बि न

[illegible]

संस्कारानां ४१ अणुवन्नादयादवावकासनस्य दया मुलसिगपदस्य ४१ वा ४२ तस्य वदीष्टि कृदया ४१ न
उपर्यस्य विदिकार्या दानस्य दानं न विदधे कृता न वत् ४१ गुक कृस्य गवजवकायक ४१ न कृता म
वत् वदनकलास ऊने कृते सूवीव ४१ उच्चाटन कृ ४१ नितवलव ४१ दानस्य वामसन्नायन कृ ४१ नीनीलवत् ४१
४१ कृवजगत् ४१ वत् ४१ सर्वोक्तो दान कृ ४१ शानास्य वत् ४१ उत्तर ४१ रकी ४१ सी ४१ काकास्य वत् ४१ दानि ४१ अस्या दानस्य
स्य ४१ एन कृ पा ४१ उव ४१ ए ४१ न कृ व ४१ सवजव ४१ अऊ म ४१ ल ४१ कृ वा ४१ वाही व ४१ नृ ४१ ए ४१ कृ को ४१ मा ४१ नी ४१ व ४१ ४१ म
४१ कृ ४१ रु ४१ नी ४१ व ४१ वा ४१ म ४१ अ ४१ कृ ४१ सी ४१ र ४१ रु ४१ वा ४१ ध ४१ न ४१ वै ४१ कृ ४१ नो ४१ डा ४१ की ४१ व ४१ म ४१ गु ४१ वि ४१ ट ४१ म ४१ न ४१ कृ ४१ सू ४१ क ४१ वा ४१ स्य ४१ व ४१ ४१ संग ४१ म

कृष्णशिवपश्चिमायाद्यावत्सर्वसुमनसुत्तावनवगच्छगच्छवज्रवभयनमङ्गनकनेनीव॥यय
 सिसफावनकृष्णलीववचनकृष्णनीववाभमपूनकृष्णधर्मधामुवज्रवकीलनकृष्णमात्रिवीव॥य
 कनककृष्णकाशवअरिवचनकृष्णनृजश्ववउहवस्यदावस्यमध्वपूरीकृष्णामकीव॥रखलकृ
 ष्णवज्रवअसनकृष्णोदीववाकृष्णलक्ष्मीव॥मृदुवनकृष्णमाननीव॥वामवायंकृष्णयवज्रववच २२
 नकृष्णवन्दववदकलकृष्णयाद्यावदावककोमनकृष्णउलकाशव॥नना४षट्तिमदशाशाया४य
 गुरुकमानलकृष्णवज्रधस्त्रीग्वनीवीजनीत्यादनकृष्णविश्वमाहजनीकृष्णद्वय॥नयथा॥योगसिद्धक
 र्मा

वयावकर्णवयिर्गुनगुपुधगवयिर्गुमन्त्राअपिया४काश्चिदिकृष्ण४सर्वा४षट्तिमदिकृष्णवयथायाः
 गमकलाया००हाकननेव॥कृष्णकर्णविनावायलकृष्णयवनगयेककृष्णयइकंसफर्णिमदिकृष्णदिनिअननव
 कविमलयराया॥अपनमपियगकिचि॥सर्वकृष्णमिकृष्णनसर्वयागिनीकृष्णमकुष्णगुवभादिनिअन
 उवनजामलुतनसमीयानि॥षट्तिमदववीजानीकानि॥किर्गुगुकीलनकृष्णयासं००निवीजस्यपूर्वद्वानवा
 मन्त्रासउकावचनकृष्ण४१००निवीजस्यदक्षिणद्वानवामअरिवचनकृष्णया४१००निवीजस्यरुनद्वान
 वाम॥नलकृष्णदवीरावनाया॥यइकंविमलयराया॥सफर्णिमदिकृष्णवावाद्यलुलखकृष्णदनलखदिऊ

मित्रगणसर्वमवस्थमख्यगणकथमन्यथावदुत्थाकषादिदिक्कृत्यादिवाक्यानापनस्यविशोधः ४४
 आसामिह नानिर्वह नस्यनूपायनीकषादिदिक्कृत्यायमनुलवदीप्यपूर्ववगत्स्वकृतवभास्वस्वदिकृतवर्कम
 दिनथागनस्याऽन्याऽस्यदिवाविदिगुनलमकृदिन्यः ४५ ॥ ०० ॥ इयदाहगवान्कात्तवकावजसत्त्वस्वरावा
 यवस्वपाग्नदाहनिगस्वभुक्तास्वनमृदिनः ४६ ॥ ०० ॥ इयदाहगवान्कात्तवकावजसत्त्वस्वरावा
 वजसत्त्वनः ४७ ॥ ०० ॥ इयदाहगवान्कात्तवकावजसत्त्वस्वरावा
 मत्पुलायाः ४८ ॥ ०० ॥ इयदाहगवान्कात्तवकावजसत्त्वस्वरावा

न्यनाकनेकनसाकनमहासुखहर्नयदाहुकात्रवकाविह नस्कंधरुदाविधमागाआकाशधामुर्वज
 धास्वीधनीस्वरावेत्यर्थः ४९ ॥ ०० ॥ इयदाहगवान्कात्तवकावजसत्त्वस्वरावा
 विह नगर्हयकमहासुखहर्नयदाहुकात्रवकाविह नस्कंधरुदाविधमागाआकाशधामुर्वज
 वाआमाद्यसिद्धिबलहानः ५० ॥ ०० ॥ इयदाहगवान्कात्तवकावजसत्त्वस्वरावा
 वजासूक्तार्कऽतिनीलानीलाकूडाकृताविजयनागधनीलाकाशामृत्ताविजसत्त्वनमृदिना ५१ ॥ ०० ॥
 पालिहम्भधामुर्वजऽवकावजसत्त्वस्वरावा ५२ ॥ ०० ॥ इयदाहगवान्कात्तवकावजसत्त्वस्वरावा

सुखमायसिद्धिना॥ वक्रवत्संख्यन। पीगावेनोवनना। व्यतामिताहने। चन३६ मृदित४८ नथागगा
४॥ साय॥ सा॥ श्रीवनधनि। व्यधृगरुस्यभादिमृदा४॥ रगवञ्चकुमस्यद्वीजं द्रुमनाकनंतुविस्तनगा
भा॥ नो॥ कमिति॥ ॥ कथमानाअपिगथाअमयामूर्तिसंघ५४॥ अं॥ रा॥ इ॥ द॥ ह॥ म॥ वा॥ वि॥ ध॥ न॥ अ॥ य॥ य॥
४॥ ॥ श्रीवक्रवत्संख्यमृगप्रवाह३५॥ इ॥ द॥ च॥ इ॥ द॥ ४॥ सु॥ क॥ ना॥ मृ॥ ना॥ धे॥ ४॥ नि॥ ४॥ सी॥ म॥ म॥ त्वा॥ मि॥ ध॥ म॥ न॥ स्या॥ ना॥ रि॥ ४॥
प॥ नार्थ॥ क॥ त्वा॥ द॥ य॥ य॥ ४॥ क॥ नी॥ ४॥ ०॥ ॥ ०॥ नि॥ श्री॥ नि॥ ष्य॥ न॥ या॥ ग॥ म॥ व॥ ती॥ स॥ मा॥ फ॥ ४॥ ०॥ ॥ ॥ ४॥ श्री॥ या॥ सु॥ रं॥
व॥ न॥ ॥ य॥ ह॥ ॥ व॥ न॥ ॥ व॥ द॥ न॥ ॥ मि॥ श्र॥ व॥ दि॥ ६॥ क॥ स॥ सि॥ द्ध॥ य॥ क॥ इ॥ न॥ नि॥ शि॥ व॥ न॥ यं॥ तु॥ व॥ ह॥ य॥ ना॥ नि॥ म॥ हा॥ ग॥ व॥ मे॥ ती॥ य॥ ने॥ म॥ हा॥

विष्णु नया श्री स्वकृती लामिनी चवन कमल सुवक्त्र जावाय्य रुद्र मूर्ति ईश्वर्या मनसज्जी लक्ष्मण
इत्यादि ॥ श्री निर्घर्ष कर्म वन नकुलिखापि नाहव ॥ यथा दृष्टं तथा लिता प्रखकीनाः
सिद्धाचलं यदि शुद्ध वामसूक्त साधनीयं महं वृत्त ॥ ॐ ॥ गुरुमंगलं एवमु सर्वदा का लीछु
हं ज्ञान ॥ ० ॥

अथामुसम्बन्धहसपपक्रममार्गसिख

१०३

आशा भक्त्या

262

ASHA 100-100

ॐ नमो रगनमः मन्त्रिय तथा गगाया जूहो नमः वृद्धाय नमः ॐ मन्त्रिय मन्त्रिय स्वाहा
सर्वरूपानन्द हिमस्वरगनरा कनका कनक्ष मन्त्रिय नन्दन दवद विधील क्रियु सुखामि सधु गतिनाथ यदु

आश्विन मास

262

भंडा संज्ञाः

॥ ग्रहका ज्ञाते ॥

नंदान्व. भद्रान्व. जयान्व. रिक्ता पूर्योतिः. सर्वा. स्थिथय. क्रमान्त्युः ॥ कनिष्ठ मध्ये फलाश्र. शु.
कले. कृष्णो. भवन्त्युत्तम. म. धर्मा. नाः ॥ ॥ बालरौ जीव शुक्रौ च. क्षत्रियो. भौम. भास्करौ ॥
स्वम. सोम्यो वै शो प्रोक्तौ. राहु. मंदौ तथा त्रयजोः ॥ ॥ ग्रहका वरा ॥ रक्ता वंगारका
दित्यो. श्वेतौ. शुक्र. निशाकरौ ॥ गुरु. सोम्यो. पीत वरौ. शनि राहु वसितो शुभौ ॥ ॥
चंद्रमा संक्रांति वरा फल ॥ ॥ मेघा. सिं. कर्क. च. तथैव रक्तं. चाप्ये. च. मीने. च. तुले. पीत. मु.
श्वेतं. दृषे. स्त्री. मे. धु. नृ. च. चंद्रे. कृष्णं. च. म. के. धु. घटे. च. सिंहं ॥ रक्ते. फले. भवे. दुः. खं. श्वेतं. च.
क. ल. सु. भ. म. ॥ परिश्री. रक्त. तथा. प्रो. क्ता. इ. ण. मे. म. तु. न. स. श. यः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

संस्कृत भाषा

262